

भारत सरकार  
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय  
कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग

लोक सभा

अतारांकित प्रश्न सं. 3000

दिनांक 22 मार्च, 2022

कृषि अनुसंधान में नई प्रौद्योगिकी

3000. श्री बिद्युत बरन महतो:  
श्री श्रीरंग आप्पा बारणे:  
श्री सुब्रत पाठक:  
श्री रविन्दर कुशवाहा:  
श्री रवि किशन:  
श्री धैर्यशील संभाजीराव माणे:  
श्री संजय सदाशिवराव मांडलिक:  
श्री मनोज तिवारी:  
श्री सुधीर गुप्ता:  
श्री प्रतापराव जाधव:

क्या कृषि और किसान कल्याण मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

- (क) क्या सरकार का कृषि अनुसंधान के क्षेत्र में नई प्रौद्योगिकी शुरू करने का विचार है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;
- (ख) उक्त प्रयोजनार्थ सरकार द्वारा आबंटित निधि का ब्यौरा क्या है;
- (ग) क्या उक्त अनुसंधान परियोजना का बाजार-संचालित विश्व व्यापार संगठन पद्धतियों के लिए पुनःअभिमुखीकरण किया जाएगा ताकि देश में किसानों की अंतर्राष्ट्रीय-बाजार में प्रतिस्पर्धा बढ़ सके और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;
- (घ) देश के किसानों को आर्थिक रूप से मतबूत करने के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) की भूमिका क्या होगी;
- (ङ) इस प्रयोजनार्थ पिछले तीन वर्षों के दौरान देश के विभिन्न भागों में सरकार द्वारा स्थापित कृषि अनुसंधान केन्द्रों का ब्यौरा क्या है; और
- (च) किसानों की स्थानीय समस्याओं के समाधान के लिए अनुसंधान को वस्तु-आधारित दृष्टिकोण से कृषि-आधारित प्रणाली की ओर उन्मुख करने के लिए सरकार द्वारा क्या कदम उठाए गए हैं?

उत्तर

कृषि और किसान कल्याण मंत्री  
(श्री नरेन्द्र सिंह तोमर)

**(क) एवं (ख):** सरकार कृषि अनुसंधान में नई प्रौद्योगिकी के इस्तेमाल को बढ़ावा देती है। भाकृअप के अनुसंधान कार्यों में उच्च पैदावार के लिए फसलों/पशुधन/मछली की आनुवंशिक वृद्धि, गुणवत्ता और जलवायु अनुकूलन, संसाधनों के संरक्षण और किसानों और हितधारकों में प्रौद्योगिकी अंतरण में सूझबूझपूर्ण आईटी आधारित प्लेटफार्म पर मुख्य रूप से ध्यान दिया जाता है। भाकृअप ने 2021-22

के दौरान परिषद द्वारा खेती के लिए विशिष्ट लक्षणों वाली 35 किस्मों और बागवानी फसलों की 94 किस्मों सहित 309 किस्मों/संकर खेतिहर फसलों को विकसित और जारी किया।

सरकार ने 2020-21 और 2021-22 के दौरान कृषि में ड्रोन, कृत्रिम इंटेलिजेंस, ब्लॉक चेन दूर संवेदन और जीआईएस सहित नई प्रौद्योगिकियों का शुभारंभ करने के लिए राज्यों को 1756.3 और 2422.7 करोड़ रुपये की राशि आवंटित की है। इसके अतिरिक्त, नई प्रौद्योगिकियों के विकास, किसानों के खेतों में प्रदर्शन आयोजित करने तथा नई प्रौद्योगिकी को अपनाने के लिए किसानों का क्षमता-निर्माण करने के वास्ते कृषि में अनुसंधान और विकास करने के लिए सरकार ने भाकृअप को वर्ष 2020-21 और 2021-22 के लिए क्रमशः 7302.50 और 7908.18 करोड़ रुपये की राशि आवंटित की है।

(ग) सरकार ने किसानों को उन्नत सेवा प्रदायगी और बाजार सुविधा की उपलब्धता सुनिश्चित करने पर उचित ध्यान दिया है। सरकार किसानों की सौदा करने की शक्ति को बढ़ाने के लिए लेन-देन लागत को कम करने और एफपीओ को बढ़ावा देने पर भी पर्याप्त बल देती है। अवसंरचना के विकास पर भी उचित ध्यान दिया गया है ताकि किसान राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय बाजार से बेहतर संपर्क स्थापित कर सकें।

(घ) भाकृअप द्वारा उत्पादन और उत्पादनोत्तर कृषि के लिए विकसित परिशुद्ध कृषि उपकरणों के साथ-साथ फसलों, बागवानी, पशु और मात्स्यिकी में उच्च पैदावार, लागत बचतकारी, रोग कीट नाशक रोधी और जलवायु अनुकूलन किस्मों और प्रौद्योगिकियों ने किसानों के उत्पादन और उत्पादकता बढ़ाने, उत्पादन लागत कम करने और आय बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भाकृअप द्वारा विकसित कृषि पद्धति मॉडलों के अपनाए जाने से किसानों को अपनी आय और अपनी आर्थिक हालत को सुदृढ़ करने में मदद मिली है। किसानों की आमदनी को बढ़ाने के लिए राज्यों को भाकृअप द्वारा उपलब्ध कराई गई राज्य विशिष्ट कार्यनीतियों से भी किसानों को अपनी आमदनी बढ़ाने में मदद मिली है।

(ङ) राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रणाली दुनियां की ऐसी सबसे बड़ी और मजबूत अनुसंधान प्रणालियों में से एक है जिसमें कुल 102 अनुसंधान संस्थान, 63 राज्य कृषि विश्वविद्यालय, 3 केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय और कृषि संकाय वाले 4 केन्द्रीय विश्वविद्यालयों के अलावा 82 अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजनाएं/नेटवर्क परियोजनाएं समाहित हैं जिनमें से प्रत्येक के देश भर में बड़ी संख्या में समन्वयकारी केन्द्र हैं। देश में चूंकि पर्याप्त संख्या में अनुसंधान केन्द्र विद्यमान है इसलिए सरकार ने पिछले 3 वर्षों के दौरान कोई नया अनुसंधान केन्द्र स्थापित नहीं किया।

(च) भाकृअप अनुसंधान को कौमोडिटी (पण्य) आधारित अनुसंधान से कृषि पद्धति आधारित एप्रोच में बदलने पर उचित बल देती है। परिषद ने इसके लिए देश के विभिन्न क्षेत्रों में बहुविषयक अनुसंधान परिसर बनाए हैं। एक समर्पित संस्थान "भाकृअप-भारतीय कृषि पद्धति अनुसंधान संस्थान (आईआईएफएसआर), मोदीपुरम" सभी कृषि जलवायुपरक क्षेत्रों में कृषि पद्धति मॉडलों के लक्षण-वर्णनों, सृजन, अध्ययन और परिष्करण पर कार्य कर रहा है। नेटवर्क/कंसोर्शिया एप्रोच के माध्यम से एकीकृत कृषि के लिए प्रौद्योगिकी के समन्वय और प्रसार में सहायता प्रदान करने और बढ़ावा देने के लिए एक अन्य संस्थान, भाकृअप- महात्मा गांधी एकीकृत कृषि अनुसंधान संस्थान स्थापित किया गया है। परिषद द्वारा विकसित 63 क्षेत्र-विशिष्ट एकीकृत कृषि पद्धति मॉडलों का देश भर में फैले अनुसंधान संस्थान और कृषि विज्ञान केन्द्रों के नेटवर्क द्वारा प्रदर्शन किया जाता है।

\*\*\*\*\*